टुकड़ों को उचित रीति से जोड़ना

बधाइयां !

यदि आपने यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता और प्रभु बनाने का निर्णय ले लिया है, तो आपने मसीह के साथ एक ऐसी अद्भुत यात्रा आरम्भ कर दी है जो कभी ख़त्म न होगी।

मसीही जीवन काफी हद तक एक लम्बी मैराथन दौड़ के समान है न कि एक सामान्य दौड़। भावुकता को मसीह के साथ आगे बढ़ने में हरगिज़ प्राथमिकता न दें क्योंकि जब आप अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यों पर नज़र दौड़ाएंगे तो यह भावुकता आपका साथ न देगी।

लम्बी दूरी की मैराथन दौड़ दौड़ने के लिए प्रशिक्षण में अधिक समय देने की आवश्यकता होती है, परन्तु अच्छा प्रशिक्षण निश्चय ही हमारी दौड़ को बेहतर करता है।

ठीक इसी प्रकार से आपकी मसीह के लिए एक श्रेष्ठ दौड़ दौड़ने में, आपको प्रशिक्षण में समय देने की आवश्यकता है। अन्तिम रेखा पर खड़े हुए मसीह को लक्ष्य बनाकर दौड़ें..... और जीतने के लिए दौड़ें!

चेतावनी !

आपके मार्ग में सभी दिशाओं से परीक्षाएं आएंगी ताकि आप दौड़ से बाहर हो जाएं, शायद उनकी ओर से भी जो आपके अतिप्रिय हैं।

परमेश्वर आपको मसीही जीवन में एक विजेता के रूप में स्थापित करना चाहता है, और वह आपकी सफलता के लिए प्रतिज्ञाबद्ध है, और उसका पवित्र आत्मा आपको सामर्थ्य देगा और जीवन की दौड़ में हर मील के फासले पर वह आपकी सहायता करेगा।

परमेश्वर के अस्त्रों का प्रयोग करें

जब एक बार आपने यीशु मसीह में अपने विश्वास को कायम कर लिया है, तो आप इस अद्भुत जीवन के रहस्यों के बारे में भी सीखना चाहेंगे, जिसकी योजना उसने आपके लिए तैयार कर रखी है। जैसे ही आप उसके द्वारा आपके लिए तैयार की गई अद्भुत योजना के ''टुकड़ों'' को उचित रीति से जोड़ लें, परम जीवन जीने के लिए तैयार हो जाएं।

टुकड़ों को जोड़ना

- पवित्र आत्मा
- प्रार्थना
- विश्वास
- संगति
- परमेश्वर का वचन
- आज्ञाकारिता

इन में से हरेक ''टुकड़ा'' एक दूसरे से जुड़ा है, और एक साथ मिलकर आपको परमेश्वर के साथ चलने की सामर्थ्य देता है। जितना अधिक समय आप यह समझने और व्यवहार में लाने में देंगे कि प्रत्येक टुकड़े के बारे में परमेश्वर का वचन क्या कहता है, मसीह के साथ आपकी यात्रा उतनी ही अद्भुत होती जाएगी।

परन्तु, ये टुकड़े तभी ठीक से एक साथ जुड़ेंगे जब ''वर्ग पहेली की रूप-रेखा का ढांचा'' वहां मौजूद होगा। इस उदाहरण में ''रूप-रेखा के ढांचे'' का अर्थ है कि आपने यीशु मसीह में अपने विश्वास को कायम कर लिया है..... और उसकी सन्तानों में से एक हो गए हैं। बिना ''रूप-रेखा के ढांचे'' के इन में से एक भी ''टुकड़ा'' नहीं जुड़ेगा।

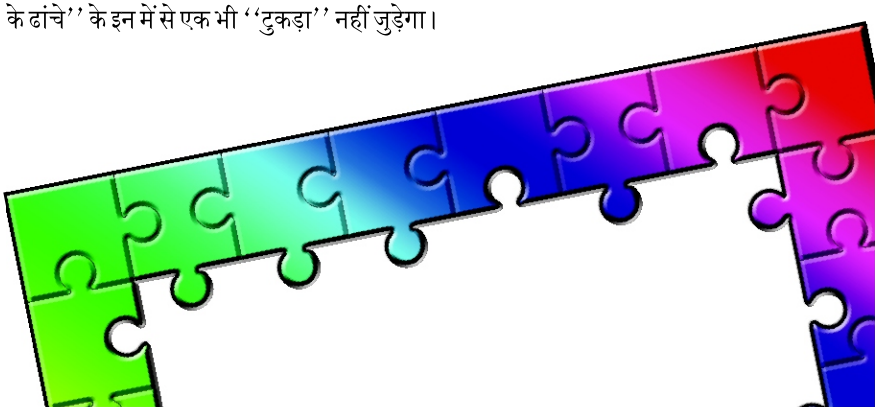

1

अध्याय एक, परम उद्देश्य मसीह के साथ अनन्तकालीन भविष्य का निर्धारण करने के आपके निर्णय में आपकी सहायता करेगा। हालांकि आपने अपने जीवन में मसीह को आमंत्रित तो किया है फिर भी इस बात की निश्चितता करना आवश्यक है कि आप उसके अधिकार में बने रहेंगे।

परम उद्देश्य

अधिकतर लोग बिना इस गहरे विचार के कि कुल मिलाकर जीवन क्या है, अपनी ज़िन्दगी बिता देते हैं। कुछ लोग तो यहां तक सोचते हैं कि जीवन एक सौभाग्य-पूर्ण ''दुर्घटना'' है।

परमेश्वर की अनन्त योजना

क्या आपने कभी यह खोजने का प्रयास किया कि कुल मिलाकर जीवन क्या है ?
आप यहां तक कैसे पहुंचे ?
आप को किस लिए रचा गया था ?
आपकी मृत्यु के पश्चात् आप कहां जाएंगे ?

तो कुल मिलाकर जीवन क्या है ? इसका क्या उद्देश्य है ..... और आप कैसे इस बारे में निश्चिन्त हो सकते हैं कि आपका सृष्टिकर्त्ता बाहें फैलाकर आपका स्वागत करेगा। स्वीकारेगा जब आप उसके सम्मुख आमने-सामने खड़े होंगे.....?

इस अध्याय को पढ़ें, और जानें कि अनन्त काल तक आपके लिए परमेश्वर की अद्भुत योजना क्या है।

सितम्बर 11, सन् 2001 को लगभग 3000 लोग वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर में आतंकवाद की हिंसक घटना के तहत त्रासदीपूर्ण ढंग से मौत के घाट उतार दिए गए। शीघ्र ही उनका सामना उनके रचनाकार से हो गया। अपना दिन शुरु करने से पहले उनमें से किसी को भी यह आभास तक न हुआ होगा कि यह इस धरती पर उनके जीवन का अन्तिम दिन है।

भविष्य में किसी मोड़ पर मैं और आप भी अपने रचनाकार से मिल रहे होंगे। परन्तु तब मसीह के लिए जीने में बहुत देर हो चुकी होगी।

क्या आप अपने रचनाकार का सामना करने के लिए तैयार हैं ? बाइबिल बताती है कि आप तैयार हो सकते हैं। यह बताती है कि आप पूर्णतया इस बारे में निश्चिन्त हो सकते हैं कि जो कोई मसीह पर विश्वास करता है, उसे स्वीकारे जाने की गारण्टी परमेश्वर की ओर से मिलती है।

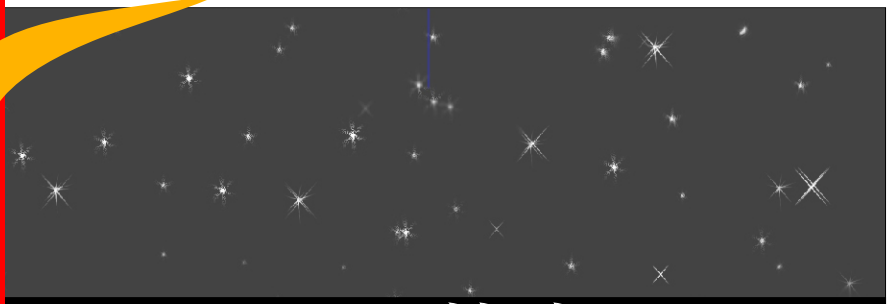

आप यहां तक कैसे पहुंचे

आप एक दुर्घटना मात्र नहीं हैं (भजन संहिता 139:13-18)।

बाइबिल बताती है कि हमारे अद्भुत परमेश्वर ने सब कुछ बिना किसी चीज़ का सहारा लिए रचा..... और यह भी बताती है कि यह सब उसकी ''हस्तकला'' का नमूना था। इस सृष्टि में सम्पूर्ण पृथ्वी भर में पाये जाने वाले रेत के कणों से भी अधिक तारे हैं, तब भी हमारे परमेश्वर का यही कहना है कि उनको एक साथ इकट्ठे करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण उसके लिए आप हैं।

भजन संहिता 139 हमें यही बताता है कि मनुष्य होने के नाते आप के बारे में परमेश्वर के व्यक्तिगत विचार उन रेत के कणों से अधिक महत्व रखते हैं। वह हर पल मेरी और आपकी चिन्ता करता है।

आपके यहां होने का क्या उद्देश्य है

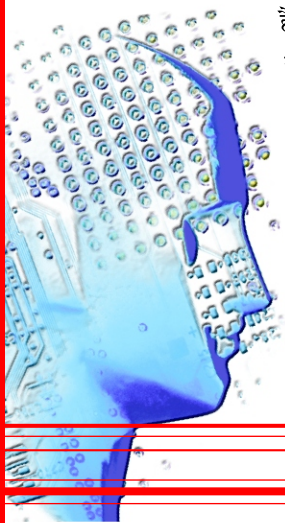

बाइबिल इस बात को प्रकट करती है कि परमेश्वर आपका प्रेमी पिता है, जिसने आपको अनन्तकाल तक उसकी सन्तान होने के लिए रचा और सृजा है। वह चाहता है कि आप उस अद्भुत खजाने को उसके साथ बांट लें जो उसने मसीह में आपके लिए रख छोड़ा है (इफिसियों 1:3-11)।

परमेश्वर चाहता तो वह आपको उस रोबोट के समान भी बना सकता था जिसके सामने उसे प्रेम करने के सिवा और कोई चारा न होता। फिर भी, वह चाहता है कि आप अपनी स्वतंत्र इच्छा के अनुसार ही उसे प्रेम करने और उसकी आज्ञा पालन का चुनाव करें। परमेश्वर ने आपको स्वतंत्र रीति से चुनाव करने का मौका दिया है।

ग़लत चुनाव

इस सृष्टि के पहले मनुष्य, आदम के सामने परमेश्वर की आज्ञा मानने या न मानने का विकल्प रखा गया था। जब आदम ने आज्ञा न मानने के विकल्प को चुना, तो उसके द्वारा स्वार्थी स्वभाव और विद्रोही भावना की त्रासदीपूर्ण बुरी दशा का जन्म हुआ जो आज भी हमारे वर्तमान संसार में एक सामाजिक बुराई के रूप में फैला हुआ है। पाप की उत्पत्ति कैसे हुई, यह जानने के लिए उत्पत्ति की पुस्तक के तीसरे अध्याय को पढ़ें।

प्र रोमियों 5:12 का सन्दर्भ इस बारे में क्या बताता है कि आदम के द्वारा हम तक क्या पहुंचा ?

समस्या तो यही है कि हम सबने अपने जीवन में ग़लत चुनाव किया है।

बाइबिल इन ग़लत चुनावों को..... पाप..... का दर्जा देती है..... जिसका मूल यूनानी भाषा में अर्थ होता है 'लक्ष्य से भटक जाना'..... एक धनुर्धर के समान, जिसका निशाना चूक जाता है।

युद्धों, आतंकवाद, सामाजिक अन्याय, स्वार्थीपन, लालच, ईर्ष्या और बुरी लतों वाले स्वभाव का एक ही कारण है; पाप।

प्र हमने अपना चुनाव करने में जो कुछ किया उसके विषय में यशायाह 53:6 क्या बताता है ?

प्र मनुष्य के मन के विषय में उत्पत्ति 6:5; 8:21 और यिर्मयाह 17:9 व 10 के सन्दर्भ क्या बताते हैं ?

प्र रोमियों 3:23 में, कितनों ने पाप किया है ?

प्र क्या आप भी उनमें शामिल हैं ?

परमेश्वर से अलगाव

बाइबिल बताती है कि परमेश्वर एकदम पाप रहित और पवित्र है और वह उन पापियों को जिनके पाप अक्षम्य हैं हरगिज़ अपनी पवित्र उपस्थिति को दूषित करने की अनुमति नहीं दे सकता। (इब्रानियों 1:13 एवं यशायाह 59:2)

पौलुस ने रोम के विश्वासियों को बताया कि खुलकर विरोध करने वालों और पाप के प्रति परमेश्वर का क्या स्वभाव है :

"परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं"।

रोमियों 1:18

प्र रोमियों 6:23 के अनुसार पाप का दण्ड क्या है ?

अगर हमारा अन्जाम केवल यही होता तो जीवन निराशापूर्ण हो जाता परन्तु हमारे अयोग्य होने के बावजूद भी, हमारे प्रेमी व दयालु परमेश्वर ने हमें आशान्वित रहने और हमारी सहायता के लिए एक मार्ग खोज निकाला।

और..... ऐसा करने के लिए उसने एक बड़ा मूल्य चुकाया.... उसका एकलौता पुत्र !

यीशु मसीह - परमेश्वर की ओर से समस्याओं का समाधान

प्रतिज्ञात मसीह

पवित्र शास्त्र के पुराने नियम में, एक निर्मल और निष्कलंक मेमने को पाप के बलिदान (मेल बलि) के रूप में दर्शाया गया है। यह भेंट आने वाले भविष्य में परमेश्वर के निष्कलंक मेमने, यीशु मसीह की ओर इशारा करती थी, जो हमारे पापों के बलिदान के रूप में परमेश्वर की ओर से योग्य बलिदान ठहरेगा (यूहन्ना 1:29)।

कई सौ सालों से इस्राएल के भविष्यद्वक्ता मसीह के आने की नबूवत करते आ रहे थे (पढ़ें यशायाह 9:6 और 53:1-12, जो कि यीशु के जन्म से 700 साल पूर्व लिखी गई)।

1500 वर्षों से भी अधिक समय के अन्तराल में, लगभग 300 से अधिक विशिष्ट सन्दर्भ उसके आने के बारे में कहे गए। उन सभी का वर्णन पवित्र शास्त्र में है।

यीशु ने भविष्यवाणियों को पूरा किया

पुराने नियम में वर्णित कुछ भविष्यवाणियां यहां नीचे लिखी हैं जो मसीह के विषय में की गई थीं, जिन्हें यीशु ने पूरा किया, उन पर ध्यान दें और उन विशिष्ट भविष्यवाणियों को लिखें जो पूरी हुईं :

पुराना नियम	नया नियम	पूरा होना :
मीका 5:2	मत्ती 2:1	
यशायाह 9:6-7	लूका 1:31-33	
भजन संहिता 22:1	मत्ती 27:46	
भजन संहिता 22:18	मत्ती 27:35	
यशायाह 7:14	लूका 1:35	

इन भविष्यवाणियों में से सिर्फ़ आठ ही शर्तों को पूरा करने में एक व्यक्ति को इतनी बाधाओं का सामना करना पड़ेगा जितना कि किसी व्यक्ति की आंख पर पट्टी बांधकर उसे टैक्सास (फ्रांस के क्षेत्रफल से भी विशाल) से बड़े आकार के क्षेत्रफल के आकार के ऊपर रखे दो फुट ऊंचे चांदी के डॉलरों के ढेर में से एक विशेष चांदी वाला डॉलर उठाने को कहा जाए।

तब भी, यीशु मसीह ने उन सारी भविष्यवाणियों में से दो सौ से भी अधिक भविष्यवाणियों को अक्षरशः पूरा किया..... एकदम वैसा ही ! और उसके पापरहित जीवन ने ही उसको इस योग्य ठहराया कि हम सबके पापों के बदले परमेश्वर ने जिस सिद्ध बलिदान को ठहराया है उसके होने के वह योग्य ठहरे (इब्रानियों 9:14)।

प्र यीशु मसीह आपके लिए कौन है ?

यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया

यीशु ने यह दावा किया कि वह वही ''मैं हूं'' शख्सियत है जो कि परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने बारे में कहा था (निर्गमन 3:14,15; यूहन्ना 8:57-59)।

यीशु ने ''मैं हूं'' के सन्दर्भ में और भी कथन अपने बारे में कहे :

''जीवन की रोटी मैं हूं''	**यूहन्ना 6:35**
''जगत की ज्योति मैं हूं''	**यूहन्ना 8:12**
''अच्छा चरवाहा मैं हूं''	**यूहन्ना 10:11**
''द्वार मैं हूं''	**यूहन्ना 10:9**
''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं''	**यूहन्ना 11:25**
''मार्ग..... सच्चाई..... और जीवन मैं ही हूं''	**यूहन्ना 14:6**
''सच्ची दाखलता मैं हूं''	**यूहन्ना 15:1**

प्र

नीचे लिखे पदों के अनुसार यीशु कौन है ?

यूहन्ना 1:1-14

_____

यूहन्ना 14:9

_____

कुलुस्सियों 1:15-20

_____

इब्रानियों 1:1-8

_____

यूहन्ना 10:30

_____

फिलिप्पियों 2:6-11

_____

कुलुस्सियों 2:9

_____

प्रकाशित वाक्य 22:12-16

_____

सारे प्रमाण स्पष्ट रूप से इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि यीशु मसीह ही परमेश्वर है।

अद्भुत !
वह जिसने इस सृष्टि को रचा मनुष्य रूप में पृथ्वी पर आ गया।

कभी-कभी लोगों के लिए इस बात को स्वीकारना काफी कठिन हो जाता है कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया। 'सन्देही थोमा' भी वैसा ही था। (पढ़ें यूहन्ना 20:24-29)।

प्र किस बात ने उसे विश्वास दिलाया ?

प्र कौन सी बात आपको विश्वास दिलाती है ?

यीशु ने क्रूस पर प्राण त्यागे

धार्मिक अगुवे इस बात को भली-भांति जानते थे कि जो बातें यीशु कह रहा है, उन बातों को केवल परमेश्वर ही कह सकता है और उन्होंने उस पर परमेश्वर की निन्दा करने का आरोप लगाया (यूहन्ना 10:33)। तिरस्कार और व्यंग्य से भरपूर एक मुकद्मे में उन्होंने उसे अपराधी करार दिया और उसे रोमवासियों के हाथों सौंप दिया ताकि उस पर दण्ड की आज्ञा हो।

उसके बाद यीशु को निर्दयता से मारा-पीटा गया, उसके हाथों में कीलें ठोंककर उसे दो डाकुओं के बीच में क्रूस पर लटका दिया गया और फिर उसे एक क़ब्र में दफ़ना दिया गया जिसके चारों ओर कड़ा पहरा था। ऐसा लगने लगा था जैसे सारी आशाएं डूब चुकी हों।

यीशु ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की !

परन्तु, तीसरे दिन वह मृतकों में से जी उठा..... ठीक वैसे ही जैसा उसने वायदा किया था (मत्ती 16:21)। प्रत्यक्षदर्शी गवाहों द्वारा प्रमाणित किए गए ऐतिहासिक प्रमाण, इस बात को साबित करते हैं कि उसके बाद 500 से भी अधिक लोगों ने यीशु को जीवित अवस्था में देखा। (1 कुरिन्थियों 15:3-8) वह आज भी जीवित है !

ऐतिहासिक प्रमाणों की जानकारी के लिए जोश मैकडॉवेल द्वारा रचित 'एवीडेन्स दैट डिमाण्डस् ए वर्डिक्ट' (प्रमाण जो फैसले की मांग करते हैं) पुस्तक पढ़ें या ली स्ट्रॉबेल द्वारा रचित 'द केस फॉर क्राइस्ट' (यीशु पर मुकद्मा) पढ़ें या हमारी वेबसाइट पर लॉग ऑन करें)।

बुद्ध मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं
मुहम्मद साहब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं
कन्फ्यूशियस मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं

यीशु मसीह जीवित है !

जब यीशु क्रूस पर यातनाओं को सहने के दौर से गुज़र रहा था तब उसके शिष्य भयभीत होकर भाग खड़े हुए थे, परन्तु जब तीन दिनों के बाद उन्होंने उसे जीवित अवस्था में देखा तो उनका हृदय भी असीम साहस से भर उठा, उन्होंने हर प्रकार के भय को त्याग दिया - यहां तक कि तब भी जब बाद में इन्हें इनके विश्वासी होने के कारण यातनाएं, देकर मौत के घाट उतारा जा रहा था।

वाह ! क्या यह अद्भुत बात नहीं ? यीशु मसीह आज भी जीवित है। बाइबिल में यीशु को ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' कहा गया है (प्रकाशित वाक्य 19:11-16) और बाइबिल यह बताती है कि यीशु मसीह इस पृथ्वी पर सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ वापस लौटेगा ! (जकर्याह 14:4; लूका 21:27)।

यीशु ने हमारे पापों का मूल्य चुकाया

पापी मनुष्य **पवित्र परमेश्वर**

यह उदाहरण दर्शाता है कि किस तरह यीशु का क्रूस आपके और परमेश्वर के बीच एक ''पुल'' बना (इब्रानियों 4:14-16)।

''और किसी के द्वारा उद्धार नहीं ! क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों के काम 4:12)।

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा :

''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं;
बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)।

परमेश्वर की ओर से मुफ्त उपहार

एक अद्‌भुत सच्चाई यह है कि यीशु ने आप सबके पापों का मूल्य क्रूस पर चुकाया..... और आपको सीधे परमेश्वर से मिला दिया है।

परमेश्वर का सिद्ध न्याय यीशु के लहू के द्वारा पूर्ण सन्तुष्टि प्रदान करता है। उसने आपको ''खरीद लिया है'' और ''वापसी'' की कोई गुंजाइश नहीं! (इब्रानियों 7:25; 9:12) हो सकता है आप इस बात पर आश्चर्य करें, ''उन सभी भले कामों का क्या जो मैंने अपने जीवन में किए हैं?''

प्र निम्नलिखित पदों में आपके उद्धार का उत्तरदायी कौन है?

	आप	यीशु
रोमियों 5:8	☐	☐
इफिसियों 2:8-9	☐	☐
तीतुस 3:5-6	☐	☐
1 पतरस 3:18	☐	☐

अनन्त जीवन परमेश्वर द्वारा दी गई एक भेंट है
आप इसे पाने के लिए स्वयं कुछ नहीं कर सकते!

हालांकि, दूसरी अन्य भेंटों की तरह, आप इसे स्वीकारने या ठुकराने का चुनाव कर सकते हैं।

चयन के लिए आप स्वतंत्र हैं!

परमेश्वर के परिवार में कैसे शामिल हों

प्र यदि आप सितम्बर 11, 2001 में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर में हुए हादसे का शिकार हुए लोगों में से एक रहे होते, तो आपने परमेश्वर को क्या उत्तर दिया होगा जब परमेश्वर ने आपसे यह प्रश्न किया होगा, ''मैं तुम्हें अपने स्वर्गीय राज्य में क्यों प्रवेश करने दूं?''

प्र 1 यूहन्ना 5:11-13 तथा यूहन्ना 3:15-18 के अनुसार, स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त करने की आवश्यक योग्यता क्या है ?

मूल यूनानी भाषा में ''विश्वास'' शब्द का अर्थ होता है :

विश्वास करना; चिपके रहना; भरोसा करना

दूसरे शब्दों में, मूल यूनानी भाषा में ''विश्वास'' एक सक्रिय भरोसा रखना है..... काफी हद तक यह विश्वास इस भरोसे जैसा होता है जो पर्वतारोहियों को अपनी सुरक्षा रस्सी पर होता है, जो उनको बांधे रखती है।

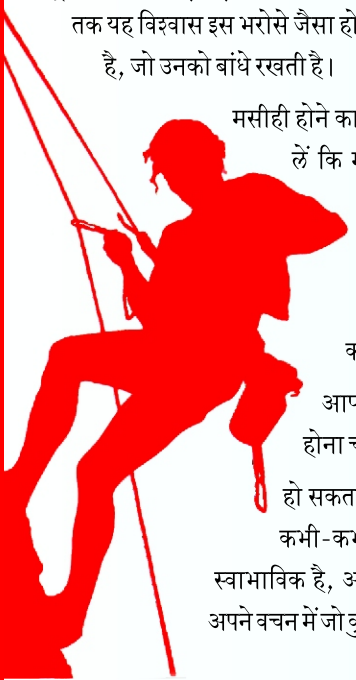

मसीही होने का अर्थ है कि आप इस बात में अपना विश्वास कायम कर लें कि मसीह ने क्रूस पर आपके लिए जान दी और आपके अनन्त जीवन की प्राप्ति उसके पुनरुत्थान में है।

विश्वास बनाम भावनाएं

मसीहियत का तात्पर्य मसीह के साथ सम्बन्ध स्थापित करना है - जिसका आधार मात्र विश्वास है !

आपका विश्वास बाइबिल में वर्णित तथ्यों पर आधारित होना चाहिए न कि भावना प्रधान ! (2 तीमुथियुस 3:16)

हो सकता है मसीह में विश्वास आपको भावुक कर दे..... और कभी-कभी होता भी ऐसा ही है। परन्तु, भावनाओं में बदलाव तो स्वाभाविक है, आप केवल उन्हीं पर भरोसा नहीं कर सकते। परमेश्वर अपने वचन में जो कुछ कहता है, आप केवल उसी पर भरोसा कर सकते हैं !

उसकी क्षमा को ग्रहण करना

आपके द्वारा अपने जीवन में लिया गया सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकारना।

यीशु के पास आने का अर्थ सांसारिक चीज़ों का ''त्याग करना'' नहीं है बल्कि उसकी क्षमा को विश्वास द्वारा ग्रहण करना है।

व्यक्तिगत निमंत्रण

अपने पापों के लिए परमेश्वर की क्षमा को ग्रहण करने के लिए, आपको व्यक्तिगत तौर से यीशु मसीह को अपने जीवन में आमंत्रित करना आवश्यक है (यूहन्ना 1:12)। परमेश्वर आपके विचारों और इरादों को जानता है। उसकी इच्छा है कि आप विश्वास की भरपूरी और दीनता के साथ उसके पास आएं, उसका धन्यवाद करें कि आपके लिए उसने क्रूस पर अपनी जान दी।

आप मसीह को अपने जीवन में व्यक्तिगत रूप से आकर आपके पापों को क्षमा करने को कहकर, उसे अपने जीवन में ग्रहण कर सकते हैं। बहुत ही साधारण तरीके से निम्न शब्दों को अपनी प्रार्थना में कहें, इस विश्वास के साथ कि वह आपको उत्तर देगा।

''प्रिय प्रभु यीशु, मेरे अतीत, वर्तमान और भविष्य के सब पापों के लिए क्रूस पर अपनी जान देने के लिए आपका धन्यवाद हो। मुझे उस अनन्त जीवन को देने के लिए जिसे आपने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा मेरे लिए सम्भव किया, आपका धन्यवाद हो। मैं विश्वास के साथ आपको अपना मुक्तिदाता ग्रहण करता हूं, और मेरी इच्छा है कि मेरे इस जीवन के प्रभु आप बनें''।

दिनांक :

प्र क्या आपने व्यक्तिगत रूप से कभी यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित किया है ? यदि हां तो कब ?

मृत्यु के पश्चात् आप कहां जाएंगे

प्र यदि आपके जीवन में यीशु मसीह है, तो दूसरी कौन सी चीज़ के प्रति आप आश्वस्त हैं ? (1 यूहन्ना 5:11-13)

प्र जब एक बार आपने मसीह में अपने विश्वास को कायम कर लिया है, तो क्या और कोई चीज़ ऐसी है जो परमेश्वर के प्रेम से आपको अलग कर सकती है ? (रोमियों 8:38,39)

प्र क्या मसीह आपको कभी त्यागेगा ? (इब्रानियों 13:5) _____

प्र परमेश्वर आपके पापों को कब तक क्षमा करेगा ? (इब्रानियों 8:12)

यदि आपने अपने विश्वास को मसीह यीशु में कायम कर लिया है, तो आपकी नियति अनन्त काल को है..... सर्वदा !

परमेश्वर की सन्तान होने के नाते वह हमेशा आपसे प्रेम रखेगा - यहां तक कि तब भी जब आप उसके प्रति असफल हो जाएंगे। वह आपको कभी भी नहीं त्यागेगा - यहां तक कि तब भी जब आप उसे त्याग दें। इस दौड़ में दौड़ना बन्द न करें।

मसीह में आपकी विरासत

मसीही होने के नाते आपको एक अद्भुत विरासत मिली हुई है :

- आपके अपराध पूरी तरह क्षमा किए गए हैं। (कुलुस्सियों 2:13,14)
- आप परमेश्वर की सन्तान बन चुके हैं - हमेशा के लिए (यूहन्ना 1:12)
- वास्तव में मसीह आपके जीवनों में प्रवेश कर चुका है। (प्रकाशित वाक्य 3:20)
- पवित्र आत्मा ने आपकी ज़िम्मेदारी ली हुई है। (2 कुरिन्थियों 1:22)
- मसीह आपको अपना सा स्वभाव प्रदान करता है। (2 कुरिन्थियों 5:17)

इन पदों को पढ़ने के लिए समय निकालें जो आपको आपकी अद्भुत विरासत के बारे में बताते हैं, और इसे आपको देने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें।

मसीह के लिए जीना

समय बीतने के साथ, मसीही विश्वास का प्रतिफल परमेश्वर के वचनों को आज्ञाकारिता के साथ मानने में मिलता जाता है, तब भी जब जीवन उतार-चढावों से होकर गुज़र रहा होता है (याकूब 2:17)। हालांकि, बाइबिल बताती है कि मसीही जीवन एक युद्ध भूमि के समान है।

शैतान आपके जीवन में रुकावट डालने का प्रयास करेगा।
संसार इस सबके बदले आपको आसान वस्तुओं का प्रलोभन देगा।
आपकी अपनी अभिलाषाएं आप पर प्रहार करेंगी।

शैतान : शैतान एक दुष्ट विरोधी है जिसका उद्देश्य मसीह के साथ आपकी यात्रा को बिगाड़ते रहना है। बाइबिल उसे ''गर्जने वाले सिंह'' का नाम देती है जो हमेशा विश्वासियों को नाश करने की ताक में लगा रहता है। उसका सबसे बड़ा हथियार आपको परमेश्वर के वचन से दूर कर देना है .... और मसीह पर से आपकी निर्भरता को भी.... उसके बाद वह सन्देह और रुकावटों के शस्त्रों को भी प्रयोग में ला सकता है। आपको इससे डरने की ज़रूरत नहीं है। वह केवल तब ही आपको हरा सकता है जब आप इसे हराने का अवसर दें। युद्ध के लिए तैयार हो जाएं (इफिसियों 6:10-18)।

संसार : हालांकि आर्थिक और भौतिक सफलताओं को पा लेने में कोई बुराई नहीं है, बहुत ही आसान है कि सम्पत्ति और सफलताओं के प्रति इतना अधिक ध्यान केन्द्रित कर लिया जाए, कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के आगे परमेश्वर का स्थान दूसरा हो जाए। परमेश्वर आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता बनने के लिए आपके जीवनों में आपका ध्यान उसकी ओर केन्द्रित करना चाहता है..... और आप केवल तभी पूरी तौर से सन्तुष्ट हो सकते हैं जब आप उसे उसका उचित स्थान दें (मत्ती 6:33)।

''शारीरिक'' अभिलाषाएं: हम प्रतिदिन तस्वीरों और इच्छाओं के हमलों का सामना करते रहते हैं जो कि परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हैं। इनमें विवाह से पूर्व यौन सम्बन्ध, अफवाहें, क्रोध, बुरी आदतें और अन्य नाशमान व्यवहार जैसी परीक्षाएं शामिल हैं (गलतियों 5:17)।

जैसे-जैसे आप मसीह में उन्नति करते जाते हैं, आपको इन हमलों पर विजय प्राप्त करने का अधिक से अधिक अनुभव प्राप्त होता जाता है। मसीह में आपकी उन्नति और परीक्षाओं पर आपका विजय प्राप्त करना काफी हद तक आपके द्वारा परमेश्वर की उन्नति की योजना पर अमल करने पर निर्भर करता है। मसीही जीवन में या तो आप बढ़ते जाते हैं या घटते जाते हैं।

परमेश्वर की योजना अर्थात् आपका विकास

मसीही होने के नाते आपके लिए परमेश्वर की उन्नति योजना निम्न प्रकार से है :

आत्मा में होकर चलना। (पवित्र आत्मा-अध्याय 2)
अपने जीवन में परमेश्वर पर विश्वास। (विश्वास - अध्याय 3)
परमेश्वर के वचन को जानना और उस पर विश्वास करना। (परमेश्वर का वचन - अध्याय 4)
परमेश्वर से प्रार्थना करना। (प्रार्थना - अध्याय 5)
अन्य मसीहियों क साथ संगति रखना। (संगति - अध्याय 6)
मसीह की आज्ञाओं का पालन करना। (आज्ञाकारिता - अध्याय 7)

टुकड़ों को जोड़ना

जैसे-जैसे वर्ग पहेली के टुकड़े जुड़ते जाते हैं मसीह के साथ परम जीवन अपना आकार ग्रहण करने लगता है।

अतः ..... क्या आप दौड़ को दौड़ने के लिए तैयार हैं ?
जबकि इसका अर्थ है कि दिशाओं में बदलाव ?

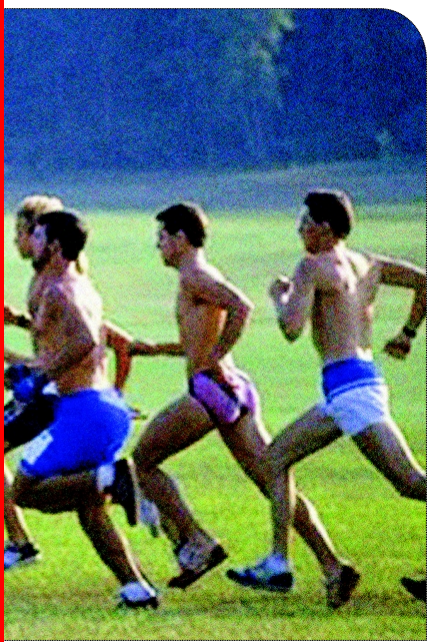

यदि आप मसीह के साथ अपने इस नए सम्बन्ध में विकास करने के विषय में गम्भीर हैं, तो आगामी अध्यायों को पढ़ने में समय बिताएं - बाइबिल के पदों पर विचार करें - और परमेश्वर को बताएं कि आप उस अद्भुत जीवन को जीना चाहते हैं जिसकी योजना उसने आपके लिए तैयार की हुई है।

और..... जीतने के लिए दौड़ें !

आगामी अध्यायों में आप यह सीखने पाएंगे कि इस ''वर्ग पहेली'' का प्रत्येक ''टुकड़ा'' किस तरह मसीह में आपकी उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य करता है।